



सुरलोक समाचार

पत्रकारिता के छात्रों द्वारा सम्पादित

हिन्दी संदर्शिका



श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, देव नगर, नई दिल्ली-110005

मई, 2023

पृष्ठ संख्या - 4

>> झलकियाँ

>> छात्रों की कलम से

>> राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

भारत के लिए अहम है G20 की अध्यक्षता वर्तमान में पत्रकारिता का स्वरूप



युप को होस्ट करने वाले या इस समूह की अध्यक्षता करने वाले देशों के बीच रोस्ट किया जाता है। G20 सदस्यों को 5 भागों में विभाजित किया गया है। भारत, दक्षिण अफ्रीका, रूस, तुर्की जैसे देश समूह 2 में शामिल किये गए हैं। G20 की एक विशेषता ट्रोइका बैठक है। इस बैठक में पिछले साल, वर्तमान साल और आने वाले साल में जिन भी देशों द्वारा G20 की अध्यक्षता की जाती है, वे शामिल होते हैं। ट्रोइका बैठक में वर्तमान में इटली, इंडोनेशिया और भारत को शामिल किया गया है।

अब अगर हम बात करें भारत में G20 की अध्यक्षता के बारे में तो 1 दिसंबर 2022 से भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने G20 की अध्यक्षता संभाली है। भारत ने इंडोनेशिया से G20 की अध्यक्षता ग्रहण की है। भारत G20 की अध्यक्षता 1 साल के लिए संभालेगा। भारतीय के लिए यह गर्व की बात है। अध्यक्षता संभालते ही माननीय प्रधानमंत्री जी को अनेक देशों द्वारा बधाइयाँ दी गई। भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। वैश्विक जिम्मेदारियों को संभालने के लिए पूरी तरह सक्षम है। दुनिया के सबसे ताकतवर आर्थिक समूह G20 की अनुवायं भारत अगले 1 साल तक करेगा। भारत एकता तथा सार्वभौमिक भावना विश्व में बढ़ाने का कार्य करेगा। भारत का विश्व मंच पर वर्चस्व काफी बढ़ रहा है, जैसे भारत ब्रिटेन को पीछे छोड़ विश्व की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बना चुका है। आशा है भारत अगले एक वर्ष की अपनी अध्यक्षता में G20 देशों को विकास के रास्ते पर और आगे तक ले जाने में सहायक होगा।



रमन बंधे
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रमाण वर्ष

पत्रकारिता जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है, वह एक ऐसी कला है जिसमें देश-दुनिया में घट रही घटनाओं की खबरों को संग्रहीत करके जनता के लाभ के लिए उसके विभिन्न पहलुओं को अलग-अलग माध्यमों के द्वारा उजागर किया जाता है। इतना ही नहीं साथ ही मीडिया का एक बहुत बड़ा दायित्व होता है जनता और सरकार के बीच की कड़ी के रूप में कार्य करना, लाचार बेबस मजबूर की आवाज उठाना और देश को विकास की ओर लेकर जाना। भारत में पत्रकारिता का एक अहम रोल हमेशा से था और आज भी है, परंतु आज तरीका बदल रहा है। आजादी से पूर्व पत्रकारों ने अंग्रेजों के खिलाफ जिस तरह से एक पत्रकारिता का दायित्व निभाया और

अंग्रेजी हुकूमत से छुटकारा दिलवाने में अपनी अहम भूमिका निभाई, वह अत्यधिक सराहनीय और प्रशंसनीय रही। उस समय ऐसे देशभक्त पत्रकार हुआ करते थे, जो अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए अपनी कलम से आजादी की लड़ाई लड़ने की ताकत रखते थे। उस समय पत्रकारों का बहुत सम्मान हुआ करता था। उनकी बातों को गंभीरता से लिया जाता था। 90 के दशक तक पत्रकारों ने सरकार एवं प्रशासन को ऐसे चेता कर रखा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की आँखें उनके हर कार्य पर पैनी नजर रखा करती थी। लेकिन यह स्थिति ज्यादा दिन तक नहीं चल पाई। धीरे-धीरे पत्रकारिता में विज्ञापन का समावेश होने लगा। साथ

शेष पृष्ठ 3 पर



पुष्पक पंच
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रमाण वर्ष

युप ऑफ ट्वेंटी (G20) अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत 1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक G20 की अध्यक्षता में रहेगा। G20 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्तमंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में की गई थी। G20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक क्रमिक अध्यक्षता में आयोजित किया जाता है। शुरुआत में G20 व्यापक आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित था, परंतु बाद में इसके एजेंडा में विस्तार करते हुए इसमें अन्य बातों के साथ व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण और भ्रष्टाचार विरोध शामिल किया

गया। इसमें 20 देश शामिल हैं। रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ G20 के सदस्य हैं। पहला शिखर सम्मेलन 14-15 नवंबर 2008 में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन को एशिया में आये वित्तीय संकट के कारण अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा शुरू किया गया था। G20 शिखर सम्मेलन में 20 देश प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि जी 20 शिखर सम्मेलन का कोई मुख्यालय नहीं है, क्योंकि हर साल इस सम्मेलन का आयोजन अलग अलग देशों में होता है। इन सम्मेलनों में अन्य देशों को भी गेस्ट कंट्री के रूप में सम्मिलित किया जाता है। G20 समूह देशों का ग्लोबल जीडीपी में 85 प्रतिशत तक का योगदान है। इसका सचिवालय हर साल G20

अपने आप से जूझते डिप्रेशन के शिकार युवा



सौमित्र मिश्रा
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रमाण वर्ष

आधुनिक जीवन शैली और समस्याओं के बढ़ते दबाव के कारण एक सहज और सक्रिय जीवन जीना मुश्किल सा हो गया है। इसके कारण आजकल लोगों, खासकर युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जैसे डिप्रेशन और अधिक चिंता। ये समस्याएँ शारीरिक समस्याओं के कारण भी हो सकती हैं, जैसे कि खुशी का माहौल न होना, खाने में संतुलित आहार का न होना और अधिक समय टीवी या मोबाइल फोन के साथ बिताते से भी समस्याएँ होती हैं। इसलिए, हमें इन समस्याओं के लक्षणों को पहचानने और एक सही उपचार के लिए डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। इसके अलावा हमें व्यायाम, ध्यान और संयम जैसी पद्धतियों को व्यवस्थित रूप से अपनाने की आवश्यकता है, ताकि हम अपने मन को स्वस्थ और सकशल रख सकें। भारतीय युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य की दिक्कतें अब आम समस्या बन चुकी हैं। इस मामले में खुद ही मोर्चा संभालते हुए



युवा ना केवल अपनी, बल्कि साथ ही दूसरों की भी मदद कर रहे हैं। युवा गलत सोच को बदलने की जंग भी लड़ रहे हैं। सही मार्गदर्शन के अभाव में बच्चे गुमराह हो रहे हैं और मानसिक तनाव से जूझ रहे हैं। यह तब तक सही नहीं हो पाएगा जब तक शिक्षण संस्थान और शिक्षक इस दिशा में ध्यान नहीं देते। सरकार और शिक्षा मंत्रालय को भी इस पर विचार करना चाहिए।

किशोरावस्था में होने वाली भावनात्मक उलझनें हों या फिर आपसी झगड़े, युवाओं को अपने दोस्तों या आस पास के करीबी लोगों से किसी भी बात पर खुलकर बात करने में कोई भी हिचक नहीं होनी चाहिए, क्योंकि आजकल युवाओं में मानसिक तनाव, डिप्रेशन और एंजाइटी जैसी चीजें

आम हो गयी हैं। सोशल मीडिया, मोबाइल फोन या फिर इंटरनेट जैसी चीजों ने इंसान से उसका बहुमूल्य वक्त छीन लिया है। आपस में बैठना हो या अपनों से खुलकर बातें करना, आजकल का व्यक्ति सब कुछ चुका है। अब कोई भी जानकारी लेनी हो या कुछ पूछना हो तो उसकी जगह ईसार्न से हटकर इंटरनेट ने ले ली है। ऐसी स्थिति में वह अपने से दूर तो होता ही है, साथ ही उनसे अपनी बातें साझा करने में हिचकती है, जिससे व्यक्ति अंदर ही अंदर बहुत सी समस्याओं से अकेले ही जूझता रह जाता है और डिप्रेशन या एंजाइटी जैसी बीमारियाँ का शिकार हो जाता है। अगर लोगों को कोई ऐसा न मिले, जो उन्हें समझता हो तो कुछ कहने-सुनने के बजाए फंदे पर झूल जाता उन्हें ज्यादा बेहतर लगता है, जो आजकल की पीढ़ी में आम हो गया है। इसका कारण सिर्फ मानसिक तनाव ही नहीं, बल्कि उनके करीबी लोगों की गलतियों के कारण और साथ ही उस अकेलेपन के कारण ऐसा होता है, जिससे आजकल का युवा रोज अकेले ही लड़ता है।

देशभक्ति का दूसरा नाम है विजयंत थापर

कैप्टन विजयंत थापर, वो नाम है जो आज भी लोगों के दिलों में जिंदा है। देशभक्ति का दूसरा नाम है, अमर शहीद कैप्टन विजयंत थापर। विजयंत थापर ने करगिल युद्ध में दुश्मन के दाँत खड़े करते हुए भारत माता की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। कैप्टन विजयंत थापर का जन्म 26 दिसंबर, 1976 को हुआ था। उनके माता-पिता उत्तरप्रदेश के नोएडा के रहने वाले हैं। विजयंत थापर के परिवार के लोग पीढ़ी दर पीढ़ी सेना में शामिल होते रहे हैं। उनके पिता कर्नल वी.एन. थापर, दादा जे.एस. थापर और परदादा डॉ. कैप्टन राम थापर भारतीय सेना में रहकर देश की सेवा कर चुके हैं।

हम लोगों के लिए काफी गर्व की बात है कि कैप्टन विजयंत ने अपनी स्नातक की पढ़ाई श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज से की। साथ ही वे हमारे कॉलेज की एनसीसी का हिस्सा रहे, जिसके कारण आगे जाकर खालसा एनसीसी का नाम विजयंत एनसीसी रखा गया।



भारतीय सेना जॉइन करने के बाद विजयंत थापर सेना की प्रसिद्ध राजपुताना (इन्फैंट्री रेजिमेंट) राइफल के सदस्य बने। 1999 में उन्हें करगिल जाने का मौका मिला। उन्होंने देश की सेवा का ये मौका बिल्कुल नहीं गंवाया और पाकिस्तान से युद्ध की तैयारी शुरू कर दी। मेजर पदमपाणि आचार्य, के. नेइक्काकुओ केंगरूस और लेफ्टिनेंट विजयंत थापर के नेतृत्व में उनकी युनिट ने 16 हजार फुट ऊँची तोलालिंग (करगिल) की चोटी पर 28 जून 1999 को हमला बोला। यहाँ फतेह हासिल करते हुए भारतीय सेना के जवानों ने तिरंगा फहराया। हालाँकि, पाकिस्तान

शेष पृष्ठ 3 पर



श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की एन.एस.एस. यूनिट ने 10 नवंबर 2022 को बहुउद्देशीय हॉल, विश्वविद्यालय खेल परिसर में 'बुनियादी ढाँचे, सूचना और नवाचार के लिए नए भारत के निर्माण' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में भाग लिया, जहाँ भारत के माननीय उपराष्ट्रपति मुख्य अतिथि थे।



श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की वेस्टर्न डॉस सोसाइटी मैगस को इस वर्ष कई प्रतिष्ठित मंचों पर प्रदर्शन करने और कॉलेज का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। मैगस ने गाजियाबाद, जयपुरिया इंस्टीट्यूट, नोएडा, और बिट्स पिलानी, राजस्थान के ओएसिस नामक उत्सव में हिस्सा लिया और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। दिल्ली और अन्य प्रदेशों की सर्वश्रेष्ठ टीमों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए मैगस कुछ प्रतियोगिताओं के फाइनल तक पहुँचने में सफल रही।



श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की एन.सी.सी. यूनिट, जो विजयंत एनसीसी के नाम से जानी जाती है, उसकी परंपरा को इस बार सीपीएल अमृत्य शूर ने निभाया, रिपब्लिक डे कैंप का हिस्सा बनकर।



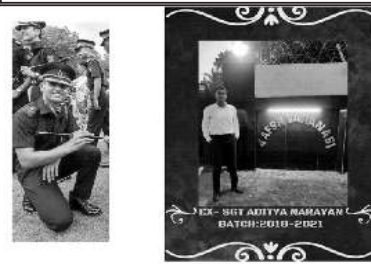
श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की एन.एस.एस. यूनिट द्वारा यमुना खादर स्लम, पूर्वी दिल्ली में किए गए दान अभियान की एक झलक। यूनिट ने जरूरतमंदों को सॉदियों के कपड़े, स्टेशनरी, खिलौने और खाने के कुछ पैकेट को दिए, जो उनके चेहरों पर मुस्कान ले आए।



22 मार्च 2023 को सुरलोक उत्सव के अंतर्गत 'नजम' द्वारा वार्षिक कार्यक्रम 'काव्यमेला 23' का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न कॉलेजों के उभरते हुए शायर व कवियों को मंच प्रदान कराया गया।



श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की ब्रामा सोसाइटी नेपथ्य ने कॉलेज का नाम राजस्थान में भी किया बुलंद। NITA राजस्थान में नेपथ्य की टीम ने जीता प्रथम पुरस्कार।



श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज के 'द देसी क्लब' ने 30 अप्रैल 2023 को टी वैंली द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्देश्य घायल जानवरों, जैसे कुत्तों आदि को सहायता प्रदान करना था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत द देसी क्लब के 20 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम पी.डब्ल्यू.एफ. में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर लोगों को पालतू पशुओं से संबंधित जानकारियाँ दी गईं। साथ ही छात्रों द्वारा कुत्तों को खाना खिलाया गया और घायल कुत्तों की मरहम-पट्टी भी की गई।



विजयंत एन.सी.सी. के कैडेट्स हर वर्ष सेना में शामिल होते हैं। यह कॉलेज के लिए गर्व की बात है। इस गौरवशाली शृंखला की झलकियाँ

1. भारतीय सेना का हिस्सा बनने पहुँचे 2017 के SUO राघव झा, जो 2. आज लेफ्टिनेंट पद पर रह कर देश सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं।
3. विजयंत एनसीसी के गौरव को रोशन करने OTA पहुँचे 2017 के कैडेट रोहित सेहरावत।
4. खालसा एनसीसी की परंपरा को बरकरार रखते हुए 2021 के साजौट आदित्य नारायण ने जीइन की नौसेना।
5. 2017 के SUO सख्तम देशवाल पहुँचे वायु सेना अकादमी, हैदराबाद।

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी ने दिनांक 22 से 24 मार्च 2023 तक कॉलेज का वार्षिकोत्सव सुरलोक आयोजित किया, जिसमें अनेक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने सहभागिता दर्ज कराई। सुरलोक के कार्यक्रमों में ए.एन.सी. ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जैसे कि गायन, आज्ञा नचले, चित्रकथा, पुराना खजाना, काव्य मेला, सप्ताक, बैटल ऑफ़ बैड्स, देख तमाशा, देसी बीट्स आदि।

इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न कॉलेजों के प्रतिभागियों को अपने हुनर का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान किया गया। गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी इस कार्यक्रम की समाप्ति पर लाइव परफॉरमेंस कराई गई, जिसमें प्रसिद्ध सिंगर अर्जुन डिल्लन द्वारा धमाकेदार गाने गाये गए।

इस वर्ष आर्ट एंड कल्चर कन्वीनर प्रोफेसर रेनु दुग्गल के मार्गदर्शन में सुरलोक का कार्यक्रम अत्यंत सफल कार्यक्रमों में शुमार रहा।

गुरु की महिमा अपरंपार

कब सुधरेगी समाज में महिलाओं की दशा?



राकेश कुमार
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर है—“गुरुब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरुदेवो महेश्वरः।

गुरुसंक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥”

प्राचीन काल में गुरु—शिष्य संबंधों का आधार गुरु का ज्ञान, मौलिकता, उनका नैतिक बल, उनका शिष्यों के प्रति स्नेह एवं गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा, गुरु की क्षमता में पूर्ण विश्वास व गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण एवं आज्ञाकारिता हुआ करता था। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण गुरु—शिष्य परंपरा को परंपराप्राप्त योग कहते हैं। गुरु—शिष्य परंपरा का श्री गणेश सांसारिक ज्ञान से होता है, पर इसका चरमोत्कर्ष शाश्वत आनंद की प्राप्ति है।

गुरु—शिष्य की परंपरा के श्रेष्ठ उदाहरण वशिष्ठ—राम, द्रोण—अर्जुन, सां दीपनी—कृष्ण, द्रोण—एकलव्य, चाणक्य—चन्द्रगुप्त, रामानन्द—कबीर, परशुराम—कर्ण आदि स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। जिन्होंने अज्ञान—रूप अधिकार से अंधे हुए लोगों की

आँखें ज्ञानांजन—रूप शलाका से खोल दीं, उन गुरुओं को नमस्कार है। गुरु शिष्य को ज्ञान का साक्षात्कार कराता है। धरती पर ऐसा कोई धन नहीं है, जिसे देकर गुरु के ऋण से उच्छ्रित हो सकें—

“एकमयक्षरं यस्तु गुरुः शिष्यं प्रबोधयेत् ॥ पृथिव्यां नास्ति तद्वयं यद्वत्ता सौनृणी भवेत् ॥”

गुरु—शिष्य परंपरा में कबीर गुरु को गोविंद से भी श्रेष्ठ मानते हुए कहते हैं— “गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाँय।

बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताया ॥”

वे मानव शरीर को विष की लता एवं गुरु को अमृत का खजाना मानते हैं एवं उद्घोष करते हैं कि सम्पूर्ण समर्पण करके भी यदि सद्गुरु की प्राप्ति हो जाए तो ये सौदा सस्ता है—

“यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।

शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ॥”



राकेश कुमार
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

भारतीय समाज में आज भी महिलाओं की स्थिति दयनीय बनी हुई है। इसका एक पहलू उनके प्रति हो रही यौन हिंसा भी है। महिलाएँ अपने अधिकार से अनजान होती हैं। बचपन से ही उन्हें अपने घर में दबकर रहने की आदत पड़ जाती है। उनकी यही मजबूरी समाज में उनकी स्थिति को दयनीय बना देती है। जिसके कारण वे अपने प्रति होने वाले अपराध की शिकायत किसी से नहीं कर पाती हैं। देखने में आया है कि रेप पीड़ित अधिकांश महिलाएँ सिर्फ इसलिए शिकायत नहीं कर पातीं, क्योंकि वो पछे जाने वाले सवालों से घबराती हैं। महिला पुलिस की कमी की वजह से पुरुष पुलिसकर्मियों का सामना करने में शर्म के कारण महिलाएँ अपने साथ हो रहे अत्याचार की शिकायत ही नहीं कर पाती हैं।

नए सर्वे के मुताबिक दिल्ली में सिर्फ 7 प्रतिशत महिला पुलिसकर्मी हैं, जो चौकियों पर बैठती हैं। जनता की रक्षा

करने के लिए तैनात पुलिस आम आदमी की सुरक्षा के बजाए वीथीआईपी, नेताओं और अधिकारियों की सेवा में जुटी हुई हैं। दिल्ली में लगभग 84500 पुलिस जवानों में से सिर्फ एक तिहाई पुलिस वाले ही आम जनता की सुरक्षा में जुटे हुए हैं। ऐसे में महिलाएँ कैसे सुरक्षित रह सकती हैं?

घरेलू हिंसा के मामले में भारत की स्थिति सबसे ज्यादा दयनीय है। भारत में अधिकांश लोग घरेलू हिंसा को अपराध नहीं मानते। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार 15 से 19 साल के 53 फीसदी लड़के और 57 फीसदी लड़कियाँ मानती हैं कि पति द्वारा अपनी पत्नी को पीटना सही है। जब बच्चा घर में यही सब देखकर बड़ा होता है तो उसके लिए ये सब आम बात होती है और वह भी आगे जाकर यही सब करता है। उसकी नजर में महिलाओं की कोई इज्जत नहीं होती है।

सवाल यह उठता है कि विज्ञान और तकनीकी युग में जी रहा समाज किशोरियों, युवतियों और महिलाओं के प्रति अमानवीय सोच क्यों रखता है और इस सोच में आखिर कब बदलाव लाएगा? मानव समाज स्त्री और पुरुष से मिलकर बना है। यानी समाज की अभिन्न अंग हैं स्त्रियाँ। जितना ध्यान पुरुषों का रखा जाता है, उतना ही स्त्रियों का रखा जाना चाहिए। हर क्षेत्र

में स्त्रियों को समान अधिकार दिया जाना चाहिए। जब महिलाएँ अपने पेट में पल रहे शिशु के पालन—पोषण में कोई भेदभाव नहीं रखतीं, तो फिर ये समाज क्यों रखता है? यही मुद्दा है जो महिलाओं को यौन हिंसा का शिकार बनाता है। यौन हिंसा का शिकार ना केवल महिलाएँ और युवतियाँ होती हैं, बल्कि मासूम बच्चियाँ भी इसका शिकार होती हैं। यौन हिंसा लगभग हर जगह, जैसे घर के अंदर—बाहर, कामकाजी जगहों पर झूलना पड़ती है। बच्चियों के प्रति होने वाले अधिकांश यौन शोषण के मामले में देखा गया है कि बच्चियाँ समझ ही नहीं पातीं कि उनके साथ गलत किया जा रहा है। ऐसे में माँ—बाप को बच्चियों को शुरू से ही स्पर्श से संबंधित गुड टच और बैड टच की जानकारी देनी चाहिए, ताकि जब कभी उन्हें इस तरह के गंदे स्पर्शों से गुजरना पड़े, तो वे इस बात को समझ पाएँ कि उनके साथ गलत हो रहा है।

हमारे समाज में महिलाओं के प्रति अपराध के बारे में शिक्षा के अभाव में इस तरह की घटनाएँ बढ़ रही हैं। जरूरत ना केवल महिलाओं को शिक्षित करने की है, बल्कि पुरुषों को भी ये बात समझाना जरूरी है कि महिलाओं की इज्जत की जाए। लड़कियों को आत्मरक्षा के योग्य बनाने की जरूरत है, तो वहीं लड़कों के विचारों में बदलाव लाने की जरूरत है।

सैनिकों को सलाम



राकेश कुमार
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

हम आज यहाँ होली मनाते हैं, क्योंकि हमारे जवान सरहद पर रह कर हमारी रक्षा करते हैं। हम आज यहाँ दिवाली मनाते हैं, क्योंकि हमारे जवान दिवाली पर भी सरहद पर ही दिए जलाते हैं। हम यहाँ चैन से सोते हैं,

क्योंकि वो वहाँ चौबीसों घंटे सातों दिन चौकन्ने होते हैं। भाई—बहन यहाँ रक्षाबंधन और भाई दूज मनाते हैं, वहाँ हमारे जवानों की कलाई सालों साल तरासे जाती हैं। कहीं पर माँ अपने बेटे को दूर जाने नहीं देती, और कहीं पर माँ अपने बेटे की राह में प्राण त्याग देती है। हम यहाँ ईद, गुरुपुर्ब और क्रिसमस पर एक दूसरे को गले लगाते हैं, पर जवान हमारी रक्षा के लिए वहाँ मौत को गले लगाते हैं। हम यहाँ अपनों से नाराज रहते हैं, वहाँ उनके परिवार उनको देखने को तरसते हैं। हम यहाँ महीने—महीने होटलों में खाना खाते हैं, पर हमारे जवान वहाँ मुश्किलों में रोटी के मोहताज हो जाते हैं। हम अपनों की रक्षा, चिंता, फिक्र करते हैं, पर वो अपनी हर दुआ में भारत का जिक्र करते हैं। हर त्योहार की बधाई से पहले में उनकी भलाई की दुआ करती हूँ, आज अपने भारत देश के हर जवान भाई को सलाम करती हूँ।

बढ़ता भारत आत्मनिर्भर भारत



राकेश कुमार
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

ख्याबों की इस दुनिया में देखो अपना देश उड़ रहा है। कितनी उपलब्धियों को छू रहा है अपना देश आत्मनिर्भर हो रहा है। दुनिया से बढ़त मिलाकर चल रहा है देखो, अपना देश उड़ रहा है।

अपने इतिहास को लिए चल रहा है कितनी हो मुश्किल कितनी परेशानी पर सभ को सुलझाए बढ़ रहा है देखो, अपना देश उड़ रहा है।

बागों में रंग और खुशबू बिखेर रहा है आज जरा—जरा मनबूत हो रहा है देखो, हमारा देश विकसित हो रहा है आज कई मंजिलों को छू रहा है अपना देश भी उठ रहा है देखो, देखो, अपना देश उड़ रहा है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

वर्तमान में पत्रकारिता का स्वरूप

ही राजनीति के साथ पत्रकारों का रिश्ता मजबूत होने लगा, जिसके कारण मीडिया पर तरह— तरह के आरोप लगाए जाने शुरू हुए। जो पत्रकारिता कभी कला और सेवा के रूप में थी, वह उद्योग का रूप लेने लगी, जिससे आम जनमानस की उम्मीद को ग्रहण स लगता चला गया। जनमानस का यह मानना है कि आम जनता के लिए बेहद ही भरोसे का यह स्तंभ आज अपने दायित्व से विमुख होता जा रहा है। एक समय था जब पत्रकारों के विषय में माना जाता था कि सच की खातिर वे कारावास की सजा भी मंजूर कर सकते हैं। लेकिन आज पूर्ण रूप से पत्रकारिता का दायित्व निभाने वाले पत्रकार अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं। लोगों का आरोप है कि मीडिया TRP की प्रतिस्पर्धा में यह भूलता चला गया कि वह दबे, कुचले एवं अन्याय से पीड़ित लोगों की उम्मीद है। आज मीडिया पूँजीपतियों के कब्जे और सत्ता के दबाव

में आकर एक अलग ही रास्ते पर चल रहा है। वर्तमान के अनेक सामाजिक, धार्मिक और जातीय संघर्षों का जिम्मेदार आज मीडिया को इहयाया जा रहा है। मीडिया पर आरोप लग रहे हैं कि वह गलत को सही और सही को गलत साबित करने की कोशिश करता है। साथ ही वह बिना किसी प्रमाण के अपना निर्णय देने की कोशिश करता है, जैसा कि आरुषि हत्याकांड के समय मीडिया ने किया था कि बिना किसी प्रमाण के एक निर्दोष व्यक्ति को हत्यारा साबित कर दिया था। इस तरह के कई अन्य मामले सामने आए हैं कि अदालत का फैसला आने से पहले मीडिया अपना फैसला सुना देता है। इतना ही नहीं मीडिया मनमाने ढंग से खबरों को जनता के सामने परोसता है। किसी फिल्मी अभिनेता या अभिनेत्री की शादी या फेशन का खबरें तक छोड़ी—बड़ी हेडलाइनों में चलती हैं, लेकिन बजट की सच्चाई या जनता के हित की खबरें कम चलाई जाती हैं। इस तरह से मीडिया ऐसी खबरों को जनता के सामने रखता है, जो आम जनता को भटकाने का काम करती हैं। इसका फल यह है कि मीडिया जगत में काफी गिरावट आ रही है और उस पर आरोपों की उंगलियाँ उठाई जा रही हैं। यदि मीडिया इन चीजों से हटकर और हर खबर को सनसनीखेज ना बनाकर जनहित के आधार पर लोगों के सामने सही खबर को सही रूप में सही समय पर प्रस्तुत करे, तो निःसंदेह देश का आवाज पलकों पर बिठाकर रखेगा ना कि गोदी मीडिया कहेगा। देश का एक बड़ा तबका आज भी मीडिया द्वारा परोसी गई खबरों पर पूर्व की भांति भरोसा बरकरार रखे हुए है। लेकिन यह कटु सत्य है कि मीडिया जनत यह वर्तमान की भांति चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब भ्रष्ट नेताओं की भांति मीडिया भी पूरे जनमानस की आँखों में चुभने लगेगा।

—संजीव

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार तृतीय वर्ष

विद्यालय की यादें



राकेश कुमार
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

आज भी याद है वो दिन कहीं गए थे सब, जो हमेशा रहते थे दिल में। उन दिनों गम तो नहीं था, पर मजा भी बहुत था। न किसी की फिकर थी, न कोई चिंता था तो बस आपस में मिलना और झगड़ना फिर टीचरों के सामने हँसना। उस समय टीचरों से ऐसे मजे से मिलते कि लगता वो हमारे दोस्त हैं पर क्या पता था, वो समय इतनी जल्दी गुजरेंगा और याद बहुत आएगा।

कहाँ गए वो चेहरे, कहीं गई वो हँसी आज भी याद है वो दिन। थी सबकी आँखों में चमक और चेहरे पे मुस्कान दिखते थे सब मिलते—जुलते पर था तो वह स्कूल का आखिरी दिन इसलिए जा पहुँचे हम गुरुजनों के पास और लिया आशीर्वाद और दी उन्होंने भविष्य की मंगलकामनाएँ याद है आज भी वो हाथ जो हमारे सिर पर रखकर दिया था उन्होंने आशीर्वाद कि हों भविष्य में कामयाब। आज भी याद है वो दिन।।

देशभक्ति का दूसरा नाम है विजयंत थापर

सेना से लोहा लेते हुए 28 जून 1999 को भारतीय सेना के तीन सैन्य अधिकारियों समेत कई जवानों ने अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। शहीद हुए अधिकारियों में कैप्टन विजयंत थापर भी शामिल थे। उनकी शहादत के दम पर भारतीय सेना ने 26 जुलाई, 1999 को पाकिस्तानी सेना को करगिल से खदेड़कर जीत हासिल की थी। कम उम्र में उनके साहस और बहादुरी को देश के लोग आज भी नमन करते हैं। उनकी वीरता को देखते हुए उन्हें मरणोपरांत वीर चक्र से सम्मानित किया गया है। नोएडा अर्थोपेडि की तरफ से नोएडा में उनके नाम से विजयंत थापर मार्ग भी बनाया गया है।



‘जिंदगी की हर कठिनाई से तुझे आगे बढ़ना है, हार मत मान, तुझे अभी और पढ़ना है’



आरिफ
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

शिक्षा मानव को सही राह दिखाने का काम करती है। एक बालक की शिक्षा उसके पैदा होते ही शुरू हो जाती है कि उसे कैसे बोलना है, कैसे चलना है, कैसे खाना है आदि। लेकिन आज के समय में शिक्षा का मतलब रद्दा मारना और पैसे कमाना हो गया है। यही कारण है कि आज का युवा पढ़ने से जी चुराता है। इसमें 10+2 के मॉडल, जिसमें विद्यार्थी की विद्यालय जाने की उम्र 6 साल की होती थी, उसे हटाकर 5+3+3+4 कर दिया गया है। इसमें विद्यार्थी की स्कूली शिक्षा 3 साल की उम्र से शुरू हो जाएगी, जो कि 15 साल तक चलेगी। इसमें 15 साल के कोर्स को 4 भागों में

बाँटा गया है

1. पहले भाग को फाउंडेशन कोर्स की संज्ञा दी गई है, जिसकी समयावधि 5 साल की है। इसके अंतर्गत छात्र को 3 साल तक जो दिल में आए वो करने की छूट दी जाएगी,

2. दूसरे भाग की बात करें, तो उसे प्रिपरेशन की संज्ञा दी गई है। इसकी समयावधि 3 साल की है, जिसमें छात्र 3 से 5 तक की पढ़ाई पूरी करेगा और अगली क्लास में जाने के लिए उसे एग्जाम देना पड़ेगा। बालक जिस भाषा में चाहे अपनी पढ़ाई कर सकता है।

3. तीसरा भाग यानी मिडिल स्टेज 3 वर्ष की होगा। इस स्टेज में छात्र 6 से 8 तक की पढ़ाई करेगा, जिसमें उसे कंप्यूटर कोड, वोकेशनल स्टडीज, मैथ्स, साइंस, आर्ट्स, इडियन लैंग्वेजेंस आदि की पढ़ाई कराई जाएगी।

4. चौथा भाग यानी सेकंडरी स्टेज 4 साल का होगा। इसमें विद्यार्थी कक्षा 9 से 14 तक का अध्ययन करेगा। इस स्टेज में कोई भी स्ट्रीम फिक्स नहीं है। स्टूडेंट अपने हिसाब से कोई भी विषय पढ़ सकता है। इसमें छात्र क्रिटिकल थिंकिंग कर सकता है, जैसे गांधी जी की अगर नरम दल के ना होकर, गरम दल के होते तो

क्या होता, इत्यादि। इससे छात्रों में सोचने की क्षमता का विकास होगा। छात्र किसी भी देश की भाषा सीख सकता है।

10+2 के बदलाव के साथ ही ग्रेजुएशन लेवल में भी बदलाव किये गए हैं। जहाँ पहले ग्रेजुएशन 3 साल का था, उसको बढ़ा कर 4 साल का कर दिया है। ग्रेजुएशन के इस बदलाव में अगर कोई छात्र पैसों की दिक्कत के कारण अपनी पढ़ाई छोड़ देता है तो बाद में उसकी स्थिति सुधरने के बाद वह वहीं से अपनी पढ़ाई आरम्भ कर सकता है। बात करें अगर पोस्ट ग्रेजुएशन की तो उसकी समयावधि 2 साल से कम करके 1 साल कर दी गई है। नेशनल एजुकेशन पालिसी के अपने फैसले को सरकार गंभीरता से आगे बढ़ा रही है और भारत की GDP का 6 प्रतिशत हिस्सा शिक्षा में लगा रही है। साथ ही जो प्राइवेट स्कूल अपने हिसाब से फीस वसूलते थे, अब उन स्कूलों की फी फीसिंग के हिसाब से तय होगी।

रिश्तों में तनाव में कारण सरकार ने मंदारिन भाषा को सिलेबस में नहीं जोड़ा है, जो कि शिक्षा के लिहाज से सही नहीं है। इसके साथ ही स्ट्रीम सिस्टम को हटा देना भी सही नहीं है। स्ट्रीम की सहायता से छात्र अपने लक्ष्य के प्रति और भी ज्यादा केंद्रित हो सकता है।

शिक्षा जीवन से नहीं बल्कि शिक्षा से जीवन है



अरुण
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो हर किसी के जीवन में बहुत उपयोगी है। मनुष्य के जीवन में जितना महत्व भोजन, कपड़े, हवा और पानी का है, उससे कहीं अधिक महत्व शिक्षा का है। शिक्षा मनुष्य का वह गुण है, जो उसे सही मायनों में मनुष्य बनाता है।

आधुनिक युग में शिक्षा का मकसद सिर्फ नौकरी पाना है, जो कि यथार्थ रूप से उचित नहीं है। हमें यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि शिक्षा का मकसद सिर्फ नौकरी पाना नहीं है, बल्कि शिक्षा ग्रहण करके समाज तथा देश को सही दिशा प्रदान करना और सही मायनों में ईसाण बनना है।

हमारे संविधान में उल्लेखित अनुच्छेद - 21 (क) शिक्षा पर जोर देता है। अनुच्छेद - 21 (क) के तहत 6 से 14 वर्ष की आयु तक के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने का नियम है, जो कि शिक्षा के महत्व को प्रदर्शित करता है। भगवद्गीता में कहा गया है कि शिक्षा वह है, जो मनुष्यों को उनके बंधनों से आजादी दिलाती है और जीवन के हर मोड़ पर विस्तार करती है।

गांधीजी के मुताबिक शिक्षा मनुष्य का संपूर्ण विकास करती है। शिक्षा बच्चों का आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक रूप से विकास करती है। शिक्षा ही वह उपकरण है, जो हमें विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में ला सकती है तथा समाज में प्रचलित बुराईयों को समाप्त कर सकती है।

उच्च शिक्षा का स्तर बढ़ाएगी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020



अरुण
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव किए हैं। उच्च शिक्षा व्यवस्था में भी इस नीति से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। इस नीति के लागू होने से

शैक्षणिक सत्र 2023 में ग्रेजुएशन की पढ़ाई की पूरी तरह रूपरेखा बदल दी गई है। भारत के सभी विद्यालयों में अंडर ग्रेजुएशन प्रोग्राम 3 वर्षीय के स्थान पर 4 वर्षीय कर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत यूजी प्रोग्राम के लिए विषय पाठ्यक्रम से लेकर क्रेडिट का भी नक्शा तैयार किया गया है। इसे करिकुलम एंड क्रेडिट फ्रेमवर्क फॉर अंडर ग्रेजुएट प्रोग्राम का नाम दिया गया है। इस शिक्षण व्यवस्था को केंद्रीय विश्वविद्यालयों, उच्च शिक्षण संस्थानों व राज्यों के विश्वविद्यालयों से भी साझा किया गया है। इसमें रोजगार से जुड़ने के लिए वोकेशनल स्टडी और इंटरशिप को अनिवार्य किया गया है।

नए फ्रेमवर्क में सेमेस्टर में कोई बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन सीबीसीएस में संशोधन किया गया है। नए नियमों के अनुसार 3 वर्षीय डिग्री प्रोग्राम में कम से कम 120 क्रेडिट और 4 वर्षीय डिग्री प्रोग्राम में 160 क्रेडिट लेने अनिवार्य है। प्रत्येक सेमेस्टर में 20 क्रेडिट लेना जरूरी होगा। कॉमन कोर्स के 24 क्रेडिट और इंटीग्रेटेड कोर्स के 18 क्रेडिट होंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पहले वर्ष की पढ़ाई पूरी करने पर सर्टिफिकेट, दूसरे वर्ष में डिप्लोमा, तीसरे वर्ष में डिग्री और चौथे वर्ष में ऑनर्स डिग्री व रिसर्च डिग्री मिलेगी। यदि कोई छात्र पहले वर्ष में 40 क्रेडिट और एक साल के वोकेशनल कोर्स में 4 क्रेडिट लेता है तथा पारिवारिक समस्या या किसी अन्य दिक्कत के कारण पढ़ाई छोड़नी पड़े तो

वो छात्र 3 साल के बाद (अधिकतम 7 साल के भीतर) दोबारा उस डिग्री प्रोग्राम की पढ़ाई शुरू कर सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार यूजी छात्रों को एक मुख्य विषय लेना होगा और एक माइनर सबजेक्ट (वोकेशनल कोर्स) चुनना अनिवार्य होगा। माइनर सबजेक्ट 16 क्रेडिट का होगा। सातवीं और आठवीं सेमेस्टर में छात्र को ऑनर्स और रिसर्च का विकल्प मिलेगा। जिन छात्रों के तीसरे वर्ष में 75: अंक होंगे, वे छात्र रिसर्च के लिए जा सकेंगे। छह सेमेस्टर के बाद छात्र रिसर्च एरिया में भविष्य बनाने के लिए फेसला ले सकेंगे। ऑनर्स लेने वाले छात्रों को एक सेमेस्टर तक एक सीमित स्तरीय रिसर्च पर काम करना होगा। यह पढ़ाई पूरी करने के बाद छात्रों को ऑनर्स विद रिसर्च की डिग्री मिलेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार किताबी ज्ञान के अलावा छात्रों को नैतिक शिक्षा, सामुदायिक सेवा, इंटरशिप, प्रैक्टिकल वर्क और फील्ड वर्क करना अनिवार्य होगा। 4 वर्षीय यूजी प्रोग्राम में अब छात्रों को लर्निंग आउटकम पर भी ध्यान देना होगा। इसी तरह पूरी रूपरेखा तैयार की गई है। छात्रों को समस्या का समाधान करने का कौशल, क्रिएटिव थिंकिंग, कम्युनिकेशन स्किल, लीडरशिप क्वालिटी, मानवीय मूल्य सिद्धांत के साथ-साथ अन्य विषयों को शामिल किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से छात्रों को अत्यधिक लाभ होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों को रटने की पुरानी प्रथा से वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना है। उच्चतर शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को केवल किताबी ज्ञान मिलना ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और संज्ञात्मक समझ का मुख्य कौशल प्राप्त होता है। शिक्षण की इस व्यवस्था से छात्रों के मानसिक ज्ञान की वृद्धि होगी।

कितनी अहम है नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020?



अरुण
हिंदी पत्रकारिता
एवं जनसंचार
प्रथम वर्ष

शिक्षा जगत में सालों बाद विद्वानों और बुद्धिजीवियों की समिति द्वारा संशोधित करके एक नई नीति लाई गई, जिसका उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति के नाम से किया जाता है। इस नीति के तहत शिक्षा में आधुनिक बदलाव लाने की बात कही गई है, जिससे समायुक्त रूप से बच्चों का विकास हो सके और शिक्षा के क्षेत्र में एक नया आयाम मिल सके, क्योंकि सालों से वही घिसी-पिटी पढ़ाई का माहौल चल रहा था। इस नीति ने शिक्षा को बस पढ़ने और परीक्षा देने तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि एक नया दृष्टिकोण देकर व्यक्ति को पूर्ण रूप से विकसित होने का अवसर प्रदान किया है और थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल यानी वास्तविक और व्यावहारिक नजरिए को अपनाने का अवसर दिया है। इसलिए शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में इस नीति को सराहनीय माना गया है।

किंतु विचार प्रस्तुत करना और उसे विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक सुचारु रूप से पारित करवाना, दोनों ही अलग-अलग पहलू हैं। इस नीति के तहत सभी विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में पाठ्यक्रम तैयार तो कर दिए गए हैं, लेकिन उस पाठ्यक्रम के और उन विभिन्न प्रकार के विषयों के जानकारी हैं भी या नहीं? अगर हैं तो कितने हैं? इसी प्रकार बच्चों के प्रैक्टिकल लैब की सुविधा कितने संस्थानों में है? और नए पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तक कितने जगहों पर उपलब्ध है? इन तमाम चीजों पर जाँच कौन करेगा? क्या बिना कुशल शिक्षकों के,

बिना लैब के, बिना पुस्तकों के भारत के नए शैक्षणिक मिशन का ढाँचा इस कसौटी पर खरा उतर सकेगा? इन तमाम चीजों के ना होने पर क्या नई

पक्ष
राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत एक नई सोच, एक नई विचारधारा की उत्पत्ति हुई है, जिससे शिक्षा जगत में अनेक बेड़ियों को तोड़ने का काम किया है, जो काफी सराहनीय और लाभदायक साबित हो रहा है।

राम पाण्डेय
राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए शिक्षा जगत में नई स्वतंत्रता मिली है। इसमें 1 डिग्री के साथ अन्य डिग्री भी प्राप्त कर सकते हैं, जो कि पहले नहीं हुआ करता था, लेकिन अब आसानी से हो सकता है।

अमित ठाकुर
राष्ट्रीय शिक्षा नीति छात्रों को अनेक प्रकार के विषय चयन करने का और अलग-अलग प्रकार के विषयों को पढ़ने का अवसर दे रही है, जिससे छात्र कई प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

तनवी शर्मा
राष्ट्रीय शिक्षा नीति छात्रों को अनेक प्रकार के विषय चयन करने का और अलग-अलग प्रकार के विषयों को पढ़ने का अवसर दे रही है, जिससे छात्र कई प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अरुण पाण्डेय
राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे युवाओं के लिए कई नई-नई संभावनाएँ नजर आ रही हैं, जो उनकी शिक्षा और करियर के लिए लाभकारी हैं। अ

बौद्धिक चेतना का विकास हो पाएगा? सवाल कई हैं और इन सवालों के जवाबों पर ही नई शिक्षा नीति की सफलता निर्भर है।

विपक्ष
राष्ट्रीय शिक्षा नीति आने पर बहुत सारी चुनौतियाँ बच्चों के बीच आ रही हैं, जैसे ट्रेंड शिक्षकों की कमी है, जिससे बच्चों को सही स्किल नहीं मिल पा रही हैं। प्रैक्टिकल तो एड कर दिया गया है, लेकिन कई संस्थानों में प्रैक्टिकल सिस्टम ही नहीं है।

आशी चौधरी
राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पाँचवी क्लास तक क्षेत्रीय भाषा में पढ़ने का जो प्रावधान किया गया है, उससे बच्चे के अंदर अन्य भाषा का विकास नहीं हो पाएगा। एक साथ दो डिग्रियों के प्रावधान में छात्र दोनों डिग्री में औसत ही रह जाएंगे।

शक्कन
राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पाँचवी क्लास तक क्षेत्रीय भाषा में पढ़ने का जो प्रावधान किया गया है, उससे बच्चे के अंदर अन्य भाषा का विकास नहीं हो पाएगा। एक साथ दो डिग्रियों के प्रावधान में छात्र दोनों डिग्री में औसत ही रह जाएंगे।

अश्वती शर्मा
राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत जो भी विषय पढ़ाए जा रहे हैं, उनमें संशोधन करने की जगह प्रैक्टिकल (प्रैक्टिकल लैब) पर ज्यादा फोकस होना चाहिए।

अर्चना मिश्रा
राष्ट्रीय शिक्षा नीति से बच्चे गुमराह हो रहे हैं और मानसिक तनाव से जूझ रहे हैं। यह तब तक सही नहीं हो पाएगा जब तक कि शिक्षण संस्थान और शिक्षक नहीं सही होंगे। शिक्षा मंत्रालय को इस पर काम करना चाहिए।

मार्गदर्शक मंडल

संरक्षक : प्रो. गुरमोहंदर सिंह, प्राचार्य, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज मार्गदर्शिका : प्रो. रेनु दुग्गल, विभाग प्रमारी, हिंदी और हिंदी प. एवं ज. विभाग

संपादक मंडल

संपादक : महेन्द्र प्रताप सिंह, सहायक प्राध्यापक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
छात्र संपादक : संजीव, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
छात्र उप-संपादक : भावना अवस्थी, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
छात्र सहायक संपादक : रमन पाण्डेय, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष
सूचना नंदा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष
अर्पिता, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष